

ISSN - 2231 - 2749

NUMBER - 32

2019

**A PEER REVIEWED
JOURNAL
OF THE
MADHYA PRADESH ITIHAS PARISHAD**



EDITORS

Prof. R. N. Shrivastava

Prof. Vandana Gupta

अनुक्रमणिका

1. डॉ. हरीसिंह गौर के आत्मकथा लेखन संबंधी विचार डॉ. बी. के. श्रीवास्तव	1
2. शहडोल जिले की मानवीय शैव प्रतिमाएँ डॉ. अशोक सिंह कुशराम	7
3. औपनिवेशिक भारत में दलित राजनीति हरिचरण अहिरवार	12
4. अशोक नगर जिले के पुरातात्विक स्थल श्वेता सिंह अहिरवार एवं डॉ. शान्तिदेव सिसौदिया	20
5. राजिम के देवालय (छत्तीसगढ़ के विशेष संदर्भ में) डॉ. अंजना झारिया	23
6. औपनिवेशिक वास्तुकला का अद्भुत नमूना : ग्वालियर का जय विलास पैलेस और संग्रहालय डॉ. अलीमा शहनाज सिद्दीकी	28
7. विस्मृत होती भारतीय पारम्परिक चित्र शैलियाँ डॉ. कुमकुम माथुर	32
8. 'एनो' ग्राम का ऐतिहासिक परिदृश्य डॉ. मीना श्रीवास्तव	38
9. सानौधा : दुर्ग एवं झूलापुल राजपाल सिंह	46
10. मालवा में बोधिसत्व अवलोकितेश्वर की अवधारणा डॉ. रामकुमार अहिरवार	51
11. गढ़पहरा का मोतीमहल डॉ. संतोष कुमार तिवारी	58
12. विवेकानन्द का इतिहास, धर्म एवं दर्शन प्रेम डॉ. सीमा पान्डेय	64
13. समसामयिक संदर्भों में गाँधीजी का अहिंसक श्रम-दर्शन डॉ. पंकज सिंह	69
14. गुप्तकालीन आन्तरिक व्यापार की दशा डॉ. राघवेन्द्र प्रताप सिंह	77
15. एरण के गुप्तकालीन शिलाफलकों पर अंकित कृष्णलीला दृश्य डॉ. नागेश दुबे	83
16. गुप्तकालीन कला में पर्यावरण (एरण के विशेष संदर्भ में) डॉ. शिवनारायण परते	91
17. भारतीय कला आंदोलन डॉ. किरण शुक्ल	94
18. सर्वेक्षण से ज्ञात नवीन पुरास्थलों के आधार पर तुमैन का भौगोलिक विस्तार सुल्तान सुलाहुद्दीन	105
19. ब्रिटिशकालीन भारत के सांस्कृतिक विकास में रेलवे की भूमिका (1853 ई.-1947 ई.) अखिल कुमार गुप्ता	110

डॉ. हरीसिंह गौर के आत्मकथा लेखन संबंधी विचार

डॉ. बी. के. श्रीवास्तव

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, इतिहास विभाग

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म. प्र.)

1914 ई. में प्रथम विश्वयुद्ध आरम्भ हुआ। इसी समय सागर विश्वविद्यालय के संस्थापक डॉ. हरीसिंह गौर (1870-1949 ई.) ने अपने जीवन के बारे में लिखना आरम्भ किया। आत्मकथा क्यों लिखी इसका जवाब डॉ. गौर ने शब्दों में - 'विश्व युद्ध के कारण जिन्दगी में मजबूरीवश खालीपन आ गया, कोई काम नहीं था। समुद्री यात्रा में खतरा बढ़ गया था। हवाई उड़ानों में कमी आ गई थी। अधिकांश विमान पब्लिक ड्यूटी से दूर थे। तब मैंने सोचा कि यह अच्छा होगा अगर मैं अपने खाली समय को भरने के लिये अपनी जिन्दगी की महत्वपूर्ण घटनाओं के बारे में लिखना शुरू कर दूँ और मैंने ऐसा ही किया। अपनी पहली शुरुआत में मैंने प्रथम महायुद्ध तक के अपने जीवन के बारे में लिखा था।' प्रथम विश्वयुद्ध की समाप्ति 1919 ई. के समय गौर साहब की आयु 50 वर्ष के लगभग थी। उनके 50 वर्ष तक का जीवन बड़ा ही उतार-चढ़ाव भरा था। जीवन संघर्ष क्या होता है, यह उनके जीवन से युवा वर्ग सीख कर प्रेरणा ले सकता है। डॉ. गौर लिखते हैं 'मैंने अपने 50 वर्ष की आम जिन्दगी में कई स्तरों को पाया, कई तरह की भूमिकाएँ अदा कीं। अतः मेरी जिन्दगी में यद्यपि बदलाव पूर्ण रही है परन्तु इतनी नहीं कि उसे विविधतापूर्ण कहा जा सके। लेकिन जैसी भी है उसके बारे में मैंने आने वाले अध्यायों में विषयाधारित विवरण देने का प्रयास किया है।'²

डॉ. हरीसिंह गौर का अपनी आत्मकथा लिखने का एक उद्देश्य आने वाली पीढ़ी को सफलता प्राप्त कराने का मार्ग-दर्शन देना भी था। उन्होंने लिखा है 'मैं उन युवाओं को फायदे की खातिर बताना चाहता हूँ जो मुझे उदाहरण मानकर अनुकरण करना चाहेंगे। जिंदगी के शुरुआती समय से ही मैं एक परिश्रमी छात्र रहा। सभी तरह के मनोरंजन से मैंने परहेज किया। मैं पूरी एकाग्रता से पढ़ाई में ध्यान लगाता था। मैं रोजाना 8 घंटे पढ़ता था जो मेरे ख्याल से किसी भी परीक्षा को पास करने के लिए पर्याप्त समय था। वकालात के दौरान भी मैंने इसी नियम का पालन किया हालाँकि कभी-कभी एक या दो घंटे से ज्यादा अतिरिक्त वक्त भी काम में लगाना पड़ता था। जब मुझे लगता था कि मैं अपने काम को सामान्य अवधि में पूर्ण एकाग्रता से नहीं कर पा रहा हूँ। हमेशा एक घंटा खुली हवा में घुमता था। मैं सारी जिन्दगी शराब व शबाव से दूर रहा। इसके अलावा फिल्म्स, नाटक, नाच-गाना व आनन्द उपभोग के सभी साधनों से दूर रहते हुए मैंने सारा समय अतिरिक्त महत्व की किताबों को पढ़ने में लगाया।'³

डॉ. हरीसिंह गौर ने अपनी आत्मकथा लिखने का कार्य प्रथम विश्वयुद्ध के समय से आरम्भ कर दिया था और उसके बाद जीवन के अंतिम दिनों में उसे पूर्णता प्रदान की। डॉ. गौर द्वारा आत्मकथा लिखने का कारण आत्म प्रेरणा कदापि नहीं थी जैसा कि वे स्वयं लिखते हैं 'मैं यहाँ यह भी बताना चाहता हूँ कि आत्मकथा पर यह